विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 42 : नई दिल्ली : 11-17 जनवरी 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों में विहरण कर रहे हैं। इस हिन्दी विरोधी क्षेत्र में भी स्थानीय जनता में आचार्यप्रवर के प्रति भक्ति का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। भाषायी भेद के कारण भले वे पूज्यप्रवर की प्रेरणा को अनुवाद के माध्यम से समझते हैं, किन्तु आचार्यप्रवर की मनमोहक छवि, तपोमय जीवनशैली और तेजस्वी व्यक्तित्व उनमें अनायास प्रेरणा भर देते हैं। इन क्षेत्रों में प्रवासित अन्य जैन समाज के लोग भी पूज्यप्रवर के स्वागत, प्रवचन आदि कार्यक्रमों में सोल्लास संभागी बनते हैं। इस प्रकार अहिंसा यात्रा अपनी प्रभावकता के साथ कोयम्बत्तूर की ओर गतिमान है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

नववर्ष पर परम पूज्य से मंगलपाठ सुनने उमड़ा जनसैलाब

१ जनवरी। ईस्वी सन् के नववर्ष का अवसर। जनता में हर्षोल्लास का वातावरण। विभिन्न प्रान्तों के सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में गत कल ही पहुंच चुके थे, कई लोग देर रात तक भी कडलूर पहुंचे और कई लोग आज सुबह कडलूर पहुंच रहे थे। इस प्रकार हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति हो गई।

परम पूज्य आचार्यप्रवर सूर्योदय के पश्चात् कडलूर के मूर्तिपूजक समाज की प्रार्थना को स्वीकार कर प्रवास स्थल से करीब आधा कि.मी. दूर स्थित जैन उपाश्रय में पधारे। संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। तदुपरान्त आचार्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल में पधार गए।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम करीब ग्यारह बजे से प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के मुखारविंद से उच्चरित होने वाले नववर्ष के मंगलपाठ को सुनने के लिए जनता उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रही थी। यही कारण था कि कार्यक्रम से पूर्व ही विशाल सभागार जनता से पट गया। सभागार के बाहर भी काफी लोग खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही प्रवचन स्थल 'वन्दे गुरुवरम्' से गुंजायमान हो उठा।

निर्धारित समय पर परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा मंगल महामंत्रोच्चारपूर्वक कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। करीब ११.११ बजे से परमाराध्य आचार्यप्रवर द्वारा इच्छुक लोगों को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की गई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने नववर्ष का मंगलपाठ सुनाने से पूर्व त्रिपदी वंदना का प्रयोग करवाया। तदुपरान्त करीब ११.२१ बजे से आर्ष श्लोकों आदि से युक्त मंगलपाठ सुनाया। उपस्थित विराट जनमेदिनी ने पूज्यप्रवर के मुखारविंद से उच्चरित मंगलपाठ का तन्मयतापूर्वक श्रवण किया।

आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाने के पश्चात् संकल्प गहण करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'सन् २०१९ का प्रारम्भ हुआ है। एक वर्ष की अवधि के लिए कोई अच्छा संकल्प ग्रहण करना चाहिए। उसे अपने मन की भावना के अनुसार भी ग्रहण किया जा सकता है और मैं सुझाव के रूप में एक प्रस्ताव भी दे रहा हूं कि प्रतिदिन पन्द्रह मिनिट किसी अच्छे ग्रंथ का स्वाध्याय करना। कदाचित् न हो सके तो आगे उसकी पूर्ति करने का प्रयास करना और किसी विशेष स्थिति का अपवाद भी रखा जा सकता है।' पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जनता को एक वर्ष के लिए अर्थात् ३१ दिसम्बर २०१९ की रात्रि १२ बजे तक के लिए धारणानुसार त्याग करवाया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

'आरोग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु।
चंदेसुनिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।

आर्षवाणी में 'उक्कित्तणं' नाम से छोटा-सा स्तुति पाठ है, जिसे आम भाषा में 'लोगस्स' कहा जाता है। 'लोगस्स' में चौबीसी तीर्थंकरों की स्तुति की गई है, उन्हें वंदन किया गया है। उसमें कुल सात श्लोक हैं। अंतिम तीन श्लोकों में प्रार्थना भी की गई है। किसी से कुछ मांगना हो तो पहले उसे वन्दन/प्रणाम किया जाता है तो देने वाला भी प्रसन्नता से दे सकता है। अहंकार में रहकर मांगने से सामने वाला दे या न भी दे। जहां नम्रता होती है, वहां कुछ प्राप्त भी हो सकता है। 'उक्कित्तणं' में चौबीस तीर्थंकरों को नामपूर्वक वन्दन किया गया है और उसके बाद याचना की गई है कि मैंने जिनकी स्तुति की है, जो रजमल से मुक्त हैं, जन्म-मरण से मुक्त हैं, वे तीर्थंकर मुझ पर प्रसन्न हों। व्यावहारिक दुनिया में भी बड़ों को प्रणाम किया जाता है और विशेष अवसरों पर बड़े छोटों को कुछ दें, यह प्रथा भी रही है।

कृपा की याचना के बाद दूसरी याचना की गई कि जिन तिर्थंकरों का मैंने कीर्तन, वन्दन किया है, जो लोक में उत्तम सिद्ध हैं, वे मुझे आरोग्य दें, बोधि दें, और समाधि दें। आदमी को शारीरिक स्वास्थ्य भी अभीष्ट होता है। शरीर ठीक न रहे तो कार्य में बाधा आ सकती है। मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य भी व्यक्ति चाहता है। बोधि का अर्थ है--सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र। आत्मकल्याण के लिए बोधि आवश्यक है। जीवन में समाधि-शांति की कामना भी आदमी करता है।

'उक्कित्तणं' में सातवें श्लोक में कहा गया है कि चन्द्रमाओं से भी ज्यादा निर्मल, सूर्यों से भी ज्यादा प्रकाश करने वाले और सागर के समान गंभीर सिद्ध भगवान मुझे सिद्धि प्रदान करें। यह पिछली मांगों से ज्यादा बड़ी मांग है। इस प्रकार उक्कित्तणं में कई मांगें की गई हैं।

परमात्मा के साथ आदमी का तादात्म्य जुड़ जाना चाहिए। दिनभर का सारा समय साधना में न भी लगाया जा सके तो कुछ समय तो साधना में नियोजित होना चाहिए। नमस्कार महामंत्र की एक माला प्रतिदिन नाश्ते से पहले-पहले हो जाए तो एक अच्छा उपक्रम हो सकता है।

परमात्मा से मांग की जाती है। मांगना भी उसी से चाहिए जो देने में सक्षम हो, दातार हो, उदार हो। जो कंजूस है, उससे मांगने से क्या लाभ? परमात्मा परमशक्ति और परम ज्ञान सम्पन्न होते हैं। 'लोगस्स' में उनसे याचना की गई है। साधना करते-करते हमें ऐसी स्थिति प्राप्त हो कि हमारी मांगें स्वतः पूरी हो जाएं।

सन् २०१९ के रूप में नया वर्ष प्रारम्भ हुआ है। हमारा यह एक वर्ष का समय अच्छा बीते। गृहस्थ जीवन में भी सद्भावना रहे, नैतिकता रहे और नशामुक्तता हो। किसी का बुरा करने का प्रयास भी नहीं होना चाहिए। जितनी हो सके, धर्माराधना भी चलती रहे। इस प्रकार २०१९ का वर्ष सफल-सुफल हो। इस वर्ष की योजना भी बनाई जा सकती है कि वर्ष भर में क्या करना है। योजनानुसार फिर अच्छे कार्य भी किए जा सकते हैं। इस प्रकार जीवन का एक-एक वर्ष अच्छा बीते। समय तो निरंतर बीत रहा है। उसका क्या उपयोग होता है, यह ध्यातव्य है। समय को गलत कार्यों में व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। समय का दुरुपयोग भी हो सकता है, सदुपयोग भी हो सकता है और अनुपयोग भी हो सकता है। आदमी समय का दुरुपयोग तो करे ही नहीं, अनुपयोग भी क्यों करे, उसे अपने जीवन का सदुपयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए। आदमी के लिए अच्छा वर्ष वही है, जिसमें वह अच्छा कार्य करता है और खराब वर्ष वही है, जिसमें आदमी खराब कार्य करता है।

आज कडलूर में नए वर्ष के प्रारम्भ के संदर्भ में यह कार्यक्रम समायोजित है। यहां के जैन समाज में परस्पर सौहार्द व मैत्री भाव देखने को मिला। जैन शासन में परस्पर मैत्री भावना रहनी चाहिए। एक-दूसरे के कार्यों में यथौचित्य सहयोगी बनना चाहिए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज सन् २०१८ की विदाई हुई और २०१९ का

शुभारम्भ हुआ है। नए सूर्य से जैसे नई ऊर्जा मिलती है, वैसे परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल उद्‌बोधन से सबको नई ऊर्जा प्राप्त हुई है। वैसे तो हर दिन सूरज उगता है, आता है और चला जाता है और हर दिन ही व्यक्ति को कुछ शुभ करने का संकल्प करना चाहिए, पर नए वर्ष के पहले दिन की बात ही कुछ और होती है। व्यक्ति व्यवसाय के क्षेत्र में एक साल का ऑडिट करवाकर आय-व्यय को जानता है। रुपए-पैसे का नफा-नुक्सान आसानी से जाना जा सकता है और उसकी भरपाई भी की जा सकती है, लेकिन आदमी को यह सोचना चाहिए वह जीवन के हानि-लाभ का ऑडिट कराता है या नहीं। रात को सोते समय व्यक्ति को ईमानदारी से अपना दैनिक चार्ट बनाना चाहिए। उसके लिए पहले यह सोचना चाहिए कि आज दिन भर में अच्छे कार्य कौन-कौन से किए और गलत कार्य क्या-क्या किए? इस प्रकार व्यक्ति अपने जीवन की समीक्षा कर सकता है। जो अपने जीवन की समीक्षा करने में कुशल होता है, वह अपने जीवन में उत्तरोत्तर सुधार कर सकता है और अपने जीवन को मंगलमय, आनंदमय बना सकता है।

आदमी को अतीत का बोझ उतारकर और उससे प्रेरणा लेकर अपने वर्तमान को सुन्दर बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमारा अपना जीवन मंगलमय हो, हम परिवार और समाज के लिए भी मंगलकामना करें और यह सोचें कि देश ही नहीं, पूरे विश्व में शांति का अवतरण हो, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हो। परम पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवचन से हमें जो ज्ञान का आलोक मिला है, उस आलोक में हम अपने जीवन को नई दिशा दें और उस दिशा में आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।'

कार्यक्रम में आचार्यप्रवर ने पुनः अपना मंगल उद्‌बोधन प्रदान करते हुए कहा--'इस बार नए वर्ष का प्रारम्भ भगवान पार्श्व के कल्याणक के साथ जुड़ा हुआ है। भगवान पार्श्व परम वीतराग पुरुष थे। हम उनकी स्तुति करें। (आचार्यप्रवर ने 'प्रभु पार्श्वदेव चरणों में' गीत का संगान किया।)

सन् २०१९ का चतुर्मास बेंगलुरु और मर्यादा महोत्सव कोयम्बत्तूर में है। कार्यकर्ताओं में खूब अच्छी मैत्री भावना रहे। सामने वाला तेजी में आए तो भी मेजबान को शांति रखनी चाहिए। 'अतिथि देवो भव' कहा गया है। अतिथि थके हुए हों और वे गुस्सा भी कर लें तो भी व्यवस्था करने वालों को शांति रखनी चाहिए। हमारी इस यात्रा का दक्षिण में पहला मर्यादा महोत्सव कोयम्बत्तूर में हो रहा है और सन् २०१९ का चतुर्मास बेंगलुरु में हो रहा है। ईरोड में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम है और उसी समारोह में दीक्षा होनी है। मदुरै में महावीर जयंती का कार्यक्रम है। सेलम में जन्मोत्सव व पट्‌टोत्सव का कार्यक्रम है। तिरुपुर में वर्धमान महोत्सव है। सभी कार्यक्रम मंगलमय हों।

सन् २०१९ में गुरुदेव महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का वर्ष भी प्रारम्भ हो रहा है। यह हमारे धर्मसंघ तथा औरों के लिए एक अच्छा अवसर है। आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष को 'ज्ञान चेतना वर्ष' के रूप में अभिहित किया गया है। इस वर्ष में 'संबोधि' ग्रंथ का पारायण हो, उसके आधार पर व्याख्या आदि का क्रम चले, यह अभिलषणीय है। सन् २०१९ का वर्ष हमारे लिए, आपके लिए, सबके लिए मंगलमय हो, हमारी आध्यात्मिक शुभाशंसा।'

कार्यक्रम के अंत में जैन विश्व भारती द्वारा परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की कृति 'भक्तामर अन्तस्तल का स्पर्श' के अंग्रेजी अनुवाद तथा परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की लोकप्रिय कृति 'रोज की एक सलाह' के तमिल अनुवाद का लोकार्पण किया गया। कई संस्थाओं आदि के द्वारा सन् २०१९ के कैलेण्डर आदि भी लोकार्पित किए गए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। अमृतवाणी द्वारा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण 'पारस चैनल' और 'यूट्‌यूब' के तेरापंथ चैनल पर किया गया, जिससे देश-विदेश में स्थित हजारों श्रद्धालु लाभान्वित हुए।

सायंकाल करीब सवा चार बजे आचार्यप्रवर ने कडलूर (न्यू टाउन) से कडलूर (ओल्ड टाउन) की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेक लोगों को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन

और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। करीब ४.३ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर कडलूर (ओल्ड टाउन) में पधारे। कामाक्षी षण्मुगम मेट्रिकुलेशन स्कूल में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

विरोधी के प्रति भी प्रतिशोध की भावना मत रखो

२ जनवरी। गत दो-तीन दिनों से परम पूज्य आचार्यप्रवर को कफ आदि के कारण ज्वर था। गत रात्रि में भी स्वास्थ्य में कुछ कठिनाई रही। पूज्यप्रवर ने प्रातः कडलूर (ओल्ड टाउन) से वईरानकुपम की ओर प्रस्थान किया। मुनिवृंद बार-बार आचार्यप्रवर को संतों द्वारा संचालित हस्तचालित साधन में विराजने की प्रार्थना कर रहे थे, किन्तु स्वास्थ्य में कठिनाई होते हुए भी आचार्यप्रवर ने संतों के इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया और अपने आत्मबल से पूरी दूरी पैदल ही तय की। लगभग ११.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर वराईनकुपम में स्थित श्री महालक्ष्मी पॉलीटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'क्षमा एक धर्म है। वह मोक्ष का द्वार है। भगवान महावीर क्षमा के क्षेत्र में आदर्शपुरुष थे। साधनाकाल में उन्होंने कितने-कितने उपसर्ग और कितनी कठिनाइयां झेलीं। उनके सम्मुख देवों, मनुष्यों और तिर्यंचों के द्वारा प्रतिकूलता पैदा करने का प्रयास किया गया। आदमी के जीवन में क्षमा का गुण विकसित होना चाहिए। वीर पुरुष ही क्षमा रूपी आभूषण को धारण कर सकता है। आदमी को तुच्छ बातों पर आक्रोशित नहीं होना चाहिए, अपितु क्षमादायक बनना चाहिए। स्वयं सक्षम होने पर भी सामने वाले को क्षमा कर देना बड़ी बात होती है।

कोई प्रतिकूलतापूर्ण व्यवहार करे तो उसे भी क्षमादान देने का प्रयास करना चाहिए, ताकि आत्मा पापकर्मों के बंधन से बचे। विरोध करने वाले व्यक्ति के प्रति भी प्रतिशोध की भावना नहीं करनी चाहिए। परिवार में भी सहनशीलता अपेक्षित होती है। एक-दूसरे को सह लिया जाए तो शांति रह सकती है।

सायंकालीन आहार के पश्चात् करीब सवा चार बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर ने वराईनकुपम से आलापाकम के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में आलापाकम के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग ४.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर आलापाकम में स्थित विघ्नेश्वर पॉलीटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

अशुद्ध पैसों से बचो

३ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः आलापाकम से विल्लियनल्लूर की ओर प्रस्थित हुए। आज सूर्य सम्मुखीन होते हुए भी अल्प तेजस्विता वाला प्रतीत हो रहा था। मार्ग में सबरीमला की ओर जाते लोगों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर मार्ग से करीब नौ सौ मीटर भीतर स्थित विल्लियनल्लूर गांव की गवर्नमेंट मिडिल स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। आज का प्रातःकालीन विहार करीब ६ कि.मी. का रहा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'इच्छाएं अनंत होती हैं। आदमी को अपने जीवन में इच्छाओं का परिसीमन करना चाहिए। अतिइच्छा के कारण आदमी बेईमानी भी कर सकता है। आदमी को टेक्स की भी चोरी नहीं करनी चाहिए। ईमानदारी की बात आम जनता के लिए भी है और अधिकारियों के लिए भी है।

गृहस्थ जीवन में पैसा बहुत उपयोगी होता है, किन्तु उसके संदर्भ में प्रमाणिकता रहे तो पैसे में शुद्धता रह सकती है। अन्याय से अर्जित पैसा अशुद्ध और न्याय से अर्जित पैसा शुद्ध होता है। आदमी यथासंभव अशुद्ध पैसे से बचने का प्रयास करे, प्रमाणिकता रखे, यह काम्य है।'

सायंकालीन विहार की अधिक दूरी को देखते हुए आचार्यप्रवर ने अपराह्न में करीब ३.४० बजे विल्लियनल्लूर से बी मुटलूर की ओर प्रस्थान किया। दांयीं ओर स्थित सूर्य विहार के प्रारम्भ में अपनी तेजस्विता

के साथ आतप बरसा रहा था, किन्तु ज्यों-ज्यों पूज्यचरण गंतव्य के निकट होते गए, त्यों-त्यों उसका आतप क्रमशः मंद बनता गया। यत्र-तत्र सघन वृक्षावली सड़क को सूर्य से अदृश्य बना रही थी। करीब ८.२ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर बी मुटलूर में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

गणराजा ने चिदम्बरम में पचास वर्ष पूर्व के मर्यादा महोत्सव की स्मृतियां कीं ताजा

४ जनवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः बी मुटलूर से चिदम्बरम की ओर प्रस्थित हुए। विहार मार्ग के आसपास निर्मीयमाण/निर्मित झोपड़ियां तथा उनके आसपास स्थित गायें, बकरियां आदि ग्रामीण परिवेश का दृश्य उपस्थित कर रहे थे। वेलार नदी पर बना पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर का चिदम्बरम में पावन पदार्पण चिदम्बरम के तेरापंथी एवं अन्य जैन समाज के श्रद्धालुओं के आन्तरिक उल्लास को जागृत करने वाला सिद्ध होता प्रतीत हो रहा था। लोग दूर-दूर तक पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंच रहे थे। हर ओर प्रसन्नता का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने करीब पचास वर्ष पूर्व चिदम्बरम में मर्यादा महोत्सव किया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार उस समय मात्र दो तेरापंथी परिवार ही यहां निवासित थे। आज यहां चार तेरापंथी परिवार हैं, किन्तु जनता की विशाल उपस्थिति अन्य जैन समाज के उत्साह को भी दर्शा रही थी।

चिदम्बरम का नटराज मंदिर प्राचीन और प्रसिद्ध है। करीब सैंतीस एकड़ में विस्तीर्ण यह मंदिर शिव के पांच क्षेत्रों में से एक माना जाता है, इसे आकाश क्षेत्र कहा जाता है। मंदिर के चार विशाल गोपुर हैं। तमिलनाडु की इस एरिया के अन्य मंदिरों की भांति यह मंदिर भी एक किले के रूप में दिखाई देता है। ऐसा अनुमानित होता है कि प्राचीनकाल में शत्रुओं के आक्रमण की स्थिति में राजा और प्रजा की सुरक्षा की दृष्टि से इन मंदिरों को मजबूत आकार प्रदान किया गया था। मंदिरों के बहुमंजिले विशाल गोपुरों से कई किलोमीटर दूर तक की गतिविधियों पर नजर रखना तथा शत्रु सेना से बचते हुए उस पर वार करना कुछ आसान हो सकता था। इसी प्रकार प्रायः प्रत्येक मंदिर में बने पोखर आपात स्थिति में कई दिनों तक पानी की कमी नहीं होने देते। मंदिरों में सैंकड़ों की संख्या में बने मजबूत खम्भों के पीछे कोई व्यक्ति छुपकर अपनी सुरक्षा कर सकता था। इसी प्रकार प्रायः प्रत्येक बड़े मंदिर में सुरंग भी है, जो व्यक्ति को अन्यत्र सुरक्षित स्थान में पहुंचा सकती थी। प्रायः सभी मंदिरों की सुरंगें वर्तमान में बंद की हुई हैं। जैसा कि 'नटराज' शब्द शिव के 'नृत्य के स्वामी' रूप को दर्शाता है, इसलिए यह मंदिर 'भरतनाट्यम' नृत्य के कलाकारों के लिए अपना विशेष स्थान रखता है। मंदिर के खंभों आदि पर भरतनाट्यम नृत्य की मुद्राएं अंकित हैं।

चिदम्बरम 'इमिटेशन ज्वेलरी' के लिए भी प्रसिद्ध है। यत्र-तत्र उससे सजी दुकानें इस कथन को चरितार्थ करती हुई-सी जान पड़ रही थीं।

मार्ग में 'चिदम्बरम मंदिर' के आठवें मठाधीश श्री मौनमठ स्वामी के नेतृत्व में करीब पचास पुजारी कलश, फूल, माला आदि के साथ पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित हुए। उन्होंने 'चिदम्बरम मंत्र' से पूज्यप्रवर को वर्धापित करते हुए मंदिर में पधारने की प्रार्थना की।

करीब ९.६ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर चिदम्बरम के दर्शनार्थियों पर आशीष वृष्टि करते हुए पूज्यप्रवर चिदम्बरम स्थित श्री गुरुज्ञान समन्धर मिशन मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में 'हाजरी' के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को संबोधित कर कहा--'सरलता वह तत्त्व है, जो शुद्धि करने वाला होता है। जो ऋजुभूत होता है, उसकी शोधि होती है। सरल व्यक्ति अपनी गलती को स्वीकार कर लेता है तो प्रायश्चित्त भी अच्छा हो सकता है, आलोचना करने

वाले व्यक्ति को अपनी गलती सरलतापूर्वक प्रायश्चित्त प्रदाता को अच्छी तरह बता देनी चाहिए। डॉक्टर से बीमारी और प्रायश्चित्तदाता से गलती नहीं छुपानी चाहिए।

ऋजुता होने से शुद्धि अच्छी तरह हो सकती है। धर्म वहीं ठहरता है, जहां शुद्धता होती है। धर्म छल-कपट के कीचड़ में नहीं ठहर सकता। जिसमें धर्म होता है, वह व्यक्ति निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। जिस साधु में सरलता की कमी होती है, उसकी साधुता में कमी होती है। सरलता साधु की एक कसौटी है, क्योंकि सरलता और सच्चाई का संबंध है। सच्चाई की साधना करने के लिए हृदय को सरल रखना आवश्यक होता है।

यदि भूल हो जाए तो उसे छुपाना नहीं चाहिए। बड़ों को/उचित स्थान पर बताकर उसका प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए। झूठ, माया कर उसे छुपाकर दूसरी भूल नहीं करनी चाहिए। छल-कपटपूर्वक यहां बच भी गए तो आगे उसका फल भोगना पड़ सकता है। जैसे बच्चा अपनी बात निर्विकल्प होकर अपने माता-पिता से कह देता है, उसी प्रकार प्रायश्चित्तदाता के सामने अपनी गलती निर्विकल्प होकर बता देनी चाहिए।

ऐसा प्रतीत हो रहा है कि झूठ, छल-कपट का आयुष्य ज्यादा लम्बा नहीं होता। कभी ऐसा कुछ घटित होता है कि आदमी की पिछली गलतियां भी उजागर हो जाती हैं। झूठ एक प्रकार का मीठा जहर है, वह एक बार भले अच्छा लगे, किन्तु आगे उसका भयंकर नुक्सान झेलना पड़ सकता है। सच्चाई खारे नीम की तरह होती है, जो एक बार भले कड़वी लगे, किन्तु वह होती हितकर है।'

आज चतुर्दशी होने के कारण अनायास 'हाजरी' का प्रसंग बन गया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार साधु-साध्वियों ने प्रवचन पंडाल के आसपास पंक्तिबद्ध खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया तो मानों करीब पचास वर्ष चिदम्बरम में गुरुदेव तुलसी के मर्यादा महोत्सव की स्मृतियां ताजा हो उठीं। पूज्यप्रवर ने उस मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष्य में गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित गीत का आंशिक संगान भी किया। आचार्यप्रवर द्वारा समुच्चारित पंक्तियां इस प्रकार हैं--

है धरा का पुलक कण-कण, पुलक दक्षिण का शुभांगण।
धन्य भिक्षु चिदम्बरम में, सत्य में था प्राण डाला।।
संघ अपना अब बने साकार सत्य प्रयोगशाला।।

पूज्यप्रवर ने चिदम्बरमवासियों को पावन प्रेरणा प्रदान कर अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

कार्यक्रम के दौरान महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज पूज्यप्रवर का चिदम्बरम में पधारना हुआ है और मुझे लगता है कि परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के प्रभाव को लेकर ही आचार्यप्रवर यहां पधारे हैं। तमिल भाषी क्षेत्रों में जहां-जहां आचार्यप्रवर पधारते हैं, तमिल लोग आते हैं, दर्शन करते हैं और वे भाषा नहीं जानने के बाद भी चाहते हैं कि आचार्यप्रवर से हमें आशीर्वाद मिले। आचार्यप्रवर की आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हुए हाथ उन्हें तृप्ति देते हैं, शांति देते हैं। आचार्यप्रवर के प्रवचन में संकल्पों की बात होती है और उसे तमिल भाषा में अनुवाद कर तमिल लोगों को बताया जाता है तो वे बड़ी प्रसन्नता के साथ आचार्यप्रवर के संकल्पों को स्वीकार करते हैं। ऐसा मानना चाहिए कि आचार्यप्रवर जहां-जहां पधार रहे हैं, इतिहास की पुनरावृत्ति तो हो ही रही है और उसके साथ आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के संकल्पों से जनजीवन उन्नत बन रहा है। आचार्यप्रवर मनुष्य को मनुष्य बनने की कला सिखा रहे हैं और बता रहे हैं कि अपने इस जीवन को सुधारो, ताकि अगला जीवन भी सुधर जाए। प्राणी मात्र से प्रेम करना सीखो, इससे व्यक्तित्व का अच्छा विकास हो सकेगा और जीवन भी अच्छा बन सकेगा। चिदम्बरमवासी आचार्यप्रवर के इस एक दिवसीय प्रवास का अच्छा लाभ उठाएं।'

तेरापंथ महिला मंडल-चिदम्बरम ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की।

स्थानीय तेरापंथ समाज के प्रमुख श्री लालचन्द चोरड़िया, स्थानकवासी समाज की ओर से श्री खींवराज तालेड़ा व श्री माणकचंद छलाणी, मूर्तिपूजक समाज की ओर से श्री कमलकिशोर तातेड़ तथा श्रीमती इन्दिरा कोठारी

व श्री नरेश पोकरणा ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

विद्यालय के कोरसपोण्डेंट श्री श्वेतकुमार ने कहा--'हमारा और हमारे स्कूल का बहुत बड़ा सौभाग्य है कि आज महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का शुभागमन हुआ है। न जाने कितने जन्मों की पुण्याई का प्रतिफल हमें प्राप्त हुआ है कि स्वामीजी के चरणकमल इस स्कूल में पड़े हैं। आज हम लोगों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं है। स्वामीजी की अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्र सभी के जीवन में आएं और सबके जीवन का कल्याण हो, ऐसी हमारी कामना है। मैं हमारे विद्यालय की ओर से परम पूज्य स्वामीजी का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करता हूं।'

आज प्रातः विहार मार्ग में पूज्यप्रवर से स्थानीय तेरापंथी और अन्य जैन श्रद्धालुओं ने अपने घरों, स्थानक, जैन उपाश्रय आदि की ओर पधारने की प्रार्थना की, किन्तु अतिरिक्त दूरी की अधिकता के कारण आचार्यप्रवर उस ओर नहीं पधारे। इस बात से भावाभिभूत लोगों के मन में कुछ मायूसी भी थी। लोग पुनः-पुनः आचार्यप्रवर के समक्ष उपस्थित होकर अपनी प्रार्थना श्रीचरणों में प्रस्तुत कर रहे थे। पूज्यप्रवर उनकी भावना को स्वीकार कर सायंकालीन आहार के उपरान्त स्थानक, जैन उपाश्रय आदि की ओर पधारे। पूज्यप्रवर दो स्थानक और एक उपाश्रय में पधारे और वहां कुछ-कुछ क्षण आसीन भी हुए। संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। मार्ग में कई श्रद्धालुओं को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर करीब २.३ कि.मी. की यात्रा परिसम्पन्न कर पुनः प्रवास स्थल में पधारे। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात लोग अत्यंत आह्लादित थे।

आज चिदम्बरम से करीब पच्चीस कि.मी. दूर स्थित काटमनगर कोईल में स्थित एक तेरापंथी परिवार को पूज्यप्रवर के दर्शन और निकट उपासना का सुअवसर प्राप्त हुआ। आसाहोली निवासी काटमनगर कोईल प्रवासी श्री लादूलाल सिंघवी का परिवार यह सुअवसर प्राप्त कर हर्षविभोर था।

दिशा बदल दी

प्रायः प्रतिदिन की भांति आज भी मध्याह्न में साध्वीप्रमुखाजी परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थीं। विचार-विमर्श आदि चल रहा था। इस दौरान साध्वी कीर्तिलताजी के सिंघाड़े की ओर से पत्र के माध्यम से प्राप्त बेंगलुरु में गुरुदर्शन करने की भावना पर चिन्तन चला। आचार्यप्रवर ने चिन्तन के उपरान्त उनके लिए एक संदेश लिखवाया, जिसका भाव इस प्रकार था--'तुम्हारा सिंघाड़ा एक बार दक्षिण की यात्रा कर चुका है, इसलिए दुबारा दक्षिण की ओर आने का निर्देश नहीं दिया जा रहा है।' किन्तु कुछ ही क्षणों बाद आचार्यप्रवर ने फरमाया--'यदि वे पैदल चलकर आएं तो क्या दिक्कत है।' इस करुणार्द्र चिन्तन के आधार पर आचार्यप्रवर ने साध्वी कीर्तिलताजी के सिंघाड़े को पैदल विहार करते हुए स्वास्थ्य आदि की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए बेंगलुरु की ओर विहार करने का निर्देश प्रदान कर दिया। पूज्य सन्निधि में उपस्थित एक साध्वीजी ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'गुरु हम सबके भाग्य विधाता होते हैं, कुछ ही समय में गुरु ने शिष्यों की दिशा बदल दी।'

सुविनीत होता है सुखी

५ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः चिदम्बरम से अयंगुडीपल्लम की ओर प्रस्थित हुए। 'वलेमडगम' के ग्रामीणों ने विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वलपाडगई गांव के ग्रामीणों ने समूह रूप में आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थामकर उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। कावेरी नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर इस पार पधारे। यह पुल ब्रिटिश शासन के दौरान सन् १९२४ में बना, ऐसी जानकारी मिली। कावेरी नदी कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच विवाद का कारण बनी हुई

है। नदी के निकट स्थित कोलीडेम नामक गांव में अनेक जैन परिवार निवासित हैं। आचार्यप्रवर के स्वागत में कोलीडेमवासी सोत्साह उपस्थित थे। उनकी बलवती प्रार्थना पर आचार्यप्रवर मार्ग से कुछ भीतर स्थित एस.एस. जैन स्थानक में पधारे। आज के विहार के मध्य आचार्यप्रवर ने कडलूर जिले से नागपट्टनम जिले की सीमा में प्रवेश किया।

आचार्यप्रवर करीब १० कि.मी. का विहार कर अयंगुडीपल्लम में स्थित वेंकटेश्वर हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। इस गांव में 'बांस' की लकड़ी से झूले, कुर्सी, मूडे, छाबड़ी आदि विभिन्न वस्तुओं का निर्माण होता है। मार्ग की परिपार्श्वस्थ दुकानों में इन चीजों की बहुलता से यह स्पष्ट अनुमानित हो रहा था कि ये चीजें स्थानीय व्यवसाय का प्रमुख आधार हैं। यत्र-तत्र बांस को काट-छांट कर इन चीजों तथा 'कोरा' घास से चटाई का निर्माण कार्य किया जा रहा था। बताया गया कि यहां निर्मित इन चीजों का निर्यात विदेशों में भी किया जाता है।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'अहंकार एक ऐसा तत्त्व है, जो नुक्सानदेह होता है। अविनीत व्यक्ति दुःखी हो सकता है। पशु हों या मनुष्य हों या देवता हों, यदि वे अविनीत होते हैं तो उन्हें दुःखी होना पड़ सकता है। आदमी को उद्दंडता में नहीं जाना चाहिए, उसे सुविनीत रहना चाहिए। सुविनीत व्यक्ति सुखी हो सकता है। अहंकार एक कषाय है, उसे छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिए। आदमी को अपने ज्ञान, धन, रूप, तप, सत्ता आदि का घमंड नहीं करना चाहिए।

विद्यालय के असिस्टेंट हेडमास्टर श्री नारायणन् ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को जन-जन तक पहुंचाने के लिए अहिंसा यात्रा रूपी अभियान लेकर निकले आचार्यश्री महाश्रमणजी आज हमारे विद्यालय में पधारे हैं। मैं शांतिदूत आचार्यश्री का बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। आचार्यश्रीजी का मिशन हमारे स्कूल के बच्चों का भी कल्याण करे साथ ही पूरी दुनिया फैले और लोगों का कल्याण करे।'

विद्यालय की छात्राओं ने आचार्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया।

महाश्रमण संदेश

हिसार में प्रवासित साध्वी पुण्यप्रभाजी और साध्वी प्रतिभाश्रीजी की सहवर्ती साध्वियों द्वारा ४ जनवरी २०१९ के पत्र के माध्यम से बेंगलुरु/हैदराबाद में गुरुदर्शन करने की भावना श्रीचरणों में प्रस्तुत करते हुए एक पद्य लिखा गया--

'नहीं मांग है लम्बी-चौड़ी, बस छोटा-सा है अरमान।
बेंगलुरु/हैदराबाद में, मिले गुरुदर्शन का वरदान।।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ५ जनवरी को पद्यात्मक रूप में उसका प्रत्युत्तर प्रदान किया, जो इस प्रकार है--

दूर हैदराबाद है, बैंगलोर भी दूर।
आना राजस्थान है, बहे प्रतीक्षा पूर।।
धर्मसंघ सेवा करो, रहो प्रसन्न हमेश।
निर्मलता बढ़ती रहे, महाश्रमण संदेश।।

आचार्यप्रवर का अनूठा संदेश प्राप्त कर साध्वियां प्रफुल्लित हो उठीं। उनका कृतज्ञ भावों से युक्त पत्र पूज्यप्रवर को प्राप्त हुआ, जिसमें पूज्यप्रवर के संदेश के अनुरूप निरंतर प्रगति करने का संकल्प भी व्यक्त किया गया।

गणमाली का सिरकाली में भव्य स्वागत

६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः अयंगुडीपल्लम से सिरकाली की ओर प्रस्थान किया। सिरकाली

के उत्साही तेरापंथी और अन्य जैन श्रद्धालु अलसुबह ही पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए। लोगों के चेहरों पर उल्लास मूर्तिमान बना हुआ था। आचार्यप्रवर के दर्शन की अभिलाषा लिए अयंगुडीपल्लम की एक वयोवृद्ध महिला के चलने में कठिनाई होने के बावजूद द्रुतगति से चलती हुई भीड़ के बीच से यह कहते हुए आगे बढ़ रही थी 'नाणुं पार्कुणं' (मुझे भी देखना है।) जब उसकी भावना आचार्यप्रवर को ज्ञात हुई तो पूज्यप्रवर ने अपने चरण थाम लिए। वह आचार्यप्रवर के सम्मुख पहुंची और सविनय वंदन किया। पूज्यप्रवर के दर्शन हो जाने से उपजा तृप्ति का भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था। मार्ग में अनेकानेक ग्रामीणों ने सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पुरुष लोग आचार्यप्रवर को साष्टांग वंदन तो महिलाएं अपने बच्चों के साथ पंचांग वंदन कर मंगल आशीष ग्रहण कर रही थीं। 'पुत्तूर' के ग्रामीण दर्शनार्थियों के निकट पूज्यप्रवर ने कुछ क्षण रुककर उन्हें उत्प्रेरित किया। अनेक व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समीप उनसे संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया।

एरुक्कुर में यत्र-तत्र दर्शनार्थ खड़े ग्रामीण समूहों के निकट आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। भाषायी भेद के कारण पूज्यप्रवर की प्रेरणा ग्रामीणों तक भले अनुवाद के माध्यम से पहुंच रही थी, किन्तु आचार्यप्रवर के मनमोहक मुखारविन्द के दर्शन मात्र से ही भक्तिमान ग्रामीण अलौकिक आनंद की अनुभूति करते हुए-से प्रतीत हो रहे थे।

पूज्यप्रवर सिरकाली की सीमा के निकट पधारे तो सिरकाली में स्थित 'अन्नकोईल मंदिर' और 'पेरुमाल कोईल मंदिर' के मुख्य पुजारी श्री श्रीनिवासन के नेतृत्व में कई पंडित और अन्य लोग अपनी परंपरानुसार नारियल, फूल, चावल आदि के साथ पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित हुए। उन्होंने वेद मंत्रों से पूज्यप्रवर का वर्धापन किया। इसी प्रकार 'ओसईनायगी' मंदिर के मुख्य पुजारी श्री कार्तिक तथा 'सटनादर' मंदिर के मुख्य पुजारी श्री ऋषि गुरुकल ने अन्य पुजारियों आदि के साथ पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर के स्वागत में सिरकालीवासियों ने पलक पांवड़े बिछा दिए। अपने आराध्य के अपने प्रवास क्षेत्र में पदार्पण से स्थानीय तेरापंथ समाज में अतिशय हर्षोल्लास का वातावरण था। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी मानों तेरापंथ समाज के साथ अभिन्नतया जुड़े हुए थे। यही कारण था कि मात्र छह तेरापंथी परिवारों के इस प्रवास क्षेत्र में सैंकड़ों लोग अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर के स्वागत में सोल्लास उपस्थित थे। पूज्यप्रवर की अगवानी में जैन एवं जैनेतर लोग दूर-दूर तक पहुंच रहे थे। लोगों के झुण्ड के झुण्ड आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे।

लायंस क्लब, जे.सी.आई., रोटरी क्लब, चेम्बर ऑफ कॉमर्स तथा ज्वेलरी एसोसिएशन की स्थानीय शाखाओं के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। डिस्ट्रिक्ट एज्युकेशन ऑफिसर श्री तिर्यग् राजन ने पूज्यप्रवर को सविनय वंदन कर सादर स्वागत किया। अन्नई मेडिकल ट्रेनिंग सेंटर, एस.एम. एच.एस. स्कूल, शुभम् विद्या मंदिर और बेस्ट स्कूल के छात्र-छात्राएं पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर ने उन पर आशीषवृष्टि की। मार्ग के परिपार्श्वस्थ अनेक श्रद्धालु परिवारों ने अपने-अपने घरों के समीप पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ सुना।

करीब ६.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर भव्य जुलूस के साथ श्री संपतराज, ज्ञानचंद आंचलिया परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। अपने आराध्य के अनुग्रह में अभिस्नात आंचलिया परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम एस.एस. जैन स्थानक में समायोजित हुआ। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन का परम लक्ष्य यह होना चाहिए कि मैं शाश्वत रूप में पूर्णतया दुःखमुक्त बनूं। प्राणी को दुःख अप्रिय होता है। वह दुःख से विरत रहना चाहता

है। सर्वदुःखमुक्ति का उपाय है अपनी आत्मा निग्रह करना। अपनी आत्मा के निग्रह को एक शब्द में आत्मानुशासन कहा जा सकता है। आदमी दूसरों पर अनुशासन की बात सोच सकता है, किन्तु दूसरों पर अनुशासन करने से पहले उसे स्वयं पर अनुशासन करना चाहिए। सुन्दर घोष है--'निज पर शासन, फिर अनुशासन।' आत्मा पर अनुशासन करने के लिए शरीर, वाणी और मन पर अनुशासन अपेक्षित होता है। शरीरानुशासन, वचोनुशासन और मनोनुशासन की निष्पत्ति है आत्मानुशासन। जो व्यक्ति शरीर, वाणी और मन पर अनुशासन नहीं करता, उसे दुःखी होना पड़ सकता है।

आदमी को संयम की साधना करनी चाहिए। दूसरों पर अनुशासन अच्छे रूप में वही कर सकता है, जिसका आत्मानुशासन सधा हुआ हो। आत्मानुशासन की अर्हता प्राप्त कर ही दूसरों पर अच्छा अनुशासन किया जा सकता है।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से सिरकालीवासियों ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं।

तेरापंथी महासभा के न्यासी श्री ज्ञानचंद आंचलिया तथा श्रीमती हर्षा आंचलिया ने अपने निवासा स्थान पर पूज्यप्रवर के प्रवास के संदर्भ में अपने आस्थासिक्त भावों को प्रस्तुति दी। एस.एस. जैन संघ की ओर से श्री हरखचंद बोहरा तथा श्री धनराज चौधरी, सुश्री पूजा माली, श्रीमती संगीता खिंवेसरा, और श्री हरीश आंचलिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल-सिरकाली ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावांजलि अर्पित की। बालक लक्ष्य और दिव्यांश कोठारी ने बालसुलभ भावों को प्रस्तुति दी। एस.एस. पॉलीटेक्निक कॉलेज, पुत्तूर के सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्री टी.जी. वेकटरमणी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में संस्कृत भाषा में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। संसारपक्ष में किसी रूप में आंचलिया परिवार से संबद्ध मुनि कौशलकुमारजी और साध्वी तेजस्वीप्रभाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज सिरकाली के विधायक श्री बी.टी. वार्दी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

७ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सिरकाली से सतनालपुरम की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर स्थानकवासी समाज के अनुरोध पर सिरकाली के एस.एस. जैन स्थानक में पधारे। यद्यपि गत कल का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम इसी स्थानक में समायोजित हुआ था, किन्तु लोगों ने प्रार्थना किया कि कल आपश्री का पदार्पण हमारे हॉल में नहीं हो पाया था। उनकी प्रबल भावना को स्वीकार कर पूज्यप्रवर पुनः वहां पधारे और मुख्य हॉल में कुछ क्षण आसीन हुए। लोगों ने पूज्यप्रवर से सिरकाली में चारित्रात्माओं का एक चतुर्मास प्रदान करने की प्रार्थना की। विहार के दौरान कुछ श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। करीब ४ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सतनालपुरम स्थित शुभम् विद्या मंदिर में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर का आज का प्रवास अन्यत्र निर्धारित था, किन्तु आंचलिया परिवार के अनुरोध पर पूज्यप्रवर ने आज सायं तक का प्रवास आंचलिया परिवार द्वारा संचालित इस विद्यालय में करना स्वीकार किया। आचार्यप्रवर की इस कृपा को पाकर आंचलिया परिवार अतिशय आह्लाद का अनुभव कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन के द्वारा जनता को उत्प्रेरित किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में सच्चाई का अस्तित्व है तो झूठ भी चलता है। झूठ अविश्वास का कारण बनता है। वह लोक में गर्हित माना गया है। आदमी को झूठ का वर्जन करना चाहिए। ईमानदारी की रक्षा के लिए झूठ को छोड़ना आवश्यक है। झूठ से अनेक रूपों में नुक्सान हो सकता है। जहां सच्चाई होती है, वहां कितना आनंद होता है। सच्चाई के पथ पर चलने वाले के लिए मानों पग-पग पर निधान होता है। जो सच्चाई का भक्त होता है, पहले सच्चाई उसकी परीक्षा कर सकती है। अगर वह व्यक्ति उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है, फिर तो सच्चाई मानों उसके लिए सुख और शांति का खजाना खोल देती है।

विद्यालय एक प्रकार का मंदिर होता है, क्योंकि वहां ज्ञानाराधना होती है। ज्ञान बहुत पवित्र चीज होती है। विद्या संस्थानों में विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ ईमानदारी के संस्कार भी प्राप्त हों, यह वांछनीय है। दुनिया में ईमानदारी बहुत शक्तिशाली तत्त्व है, दो शब्द हैं--वित्त और वृत्त। वित्त अर्थात् पैसा, धन और वृत्त यानी चरित्र। गृहस्थ को पैसा चाहिए, किन्तु वृत्त उससे अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए प्रयत्नपूर्वक चरित्र की रक्षा करनी चाहिए।

विद्यालय पैसा कमाने का भी एक साधन बन सकता है, एक उद्योग भी बन सकता है और सेवा का महत्त्वपूर्ण कार्य भी विद्यालय के द्वारा हो सकता है। व्यक्तित्व निर्माण का कार्य विद्यालय के द्वारा होता है। जहां ज्ञान व्यक्तित्व और संस्कार व्यक्तित्व दोनों के निर्माण का ध्यान दिया जाता है, उस विद्यालय से ज्ञान और आचार दोनों से संयुक्त व्यक्तित्व निकल सकते हैं। यह एक अच्छा सेवा का कार्य होता है। विद्यालय के माध्यम से संस्कारों की संपदा बहुत अच्छे ढंग से विकसित हो सकती है, जिसके द्वारा अच्छे व्यक्तित्वों का निर्माण किया जा सकता है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ में ज्ञानशाला का उपक्रम चलता है। वह भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। जीवन-विज्ञान भी विद्यालयों के संदर्भ में एक अच्छा उपक्रम है। उसके माध्यम से भी बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रयास किया जा सकता है। जिस देश के बच्चे अच्छे होते हैं, आशा की जा सकती है कि उस देश का भविष्य अच्छा है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज इस शुभम विद्या मंदिर में आना हुआ है। ज्ञानचंदजी आंचलिया विद्यालय में प्रवास के लिए अनुरोध किया तो मैंने उनकी भावना को स्वीकार कर लिया। यह नया विद्यालय है। इस विद्यालय के द्वारा विद्यार्थियों को अच्छा ज्ञान और अच्छे संस्कार प्राप्त हों। अणुव्रत के जो नियम शिक्षकों, विद्यार्थियों के संदर्भ में हैं, वे यहां के शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्राप्त होते रहें। विद्यालय ज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता की दृष्टि से खूब आगे बढ़े, फले-फूले, शुभाशंसा।

आचार्यप्रवर ने आंचलिया परिवार तथा विद्यालय से संबंधित अन्य लोगों को नए विद्यालय के संदर्भ में मंगलपाठ सुनाया।

बालक सौम्य-शमिक आंचलिया, सुश्री सेजल मुणोत, श्री ताराचंद आंचलिया, श्री सुदेश आंचलिया, श्रीमती के. विद्या, सुश्री मैत्री आंचलिया, श्री ज्ञानचंद आंचलिया, श्रीमती इन्द्रा कोठारी ने पूज्यचरणों में अपनी श्रद्धासिक्त भावांजलि अर्पित की। आंचलिया परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। शुभम् विद्या मंदिर के छात्र-छात्राओं ने प्रार्थना के रूप में नमस्कार महामंत्र आदि को प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों ने 'युग का बदलाव' नाटिका को प्रस्तुत किया।

विद्यालय के ट्रस्टी श्री कृष्ण माहेश्वरी ने कहा--'वैसे तो मैंने आचार्यश्री महाश्रमणजी के बारे में पहले से बहुत कुछ सुन रखा था, लेकिन कल मुझे आपके दर्शन करने, साथ चलने और प्रवचन श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उससे मुझे जो आनंद की अनुभूति हुई, उसे मैं शब्दों में नहीं बता सकता। आपकी हर समय मुस्कुराहट भरी मोहक मुखमुद्रा, शांत चित्त और अलौकिक तेज को देखकर मेरा मन उल्लसित हो गया है। आप केवल धार्मिक-आध्यात्मिक गुरु ही नहीं, बल्कि आप तो मानव मात्र को सन्मार्ग पर ले जाने वाले गुरु हैं। आज आपके पदार्पण से हमारा यह विद्यालय पावन हो गया। आपके संदेशों का हम इस विद्यालय में पूर्णतया पालित करेंगे।'

सायंकाल करीब सवा चार बजे आचार्यप्रवर सतनालपुरम से वैथीश्वरम कोईल की ओर प्रस्थित हुए। सम्मुखीन सूर्य प्रखरता के साथ आतप बरसा रहा था, किन्तु अध्यात्म जगत का महासूर्य अपनी धवल रश्मियों के साथ निरंतर गंतव्य की ओर गतिमान था। पूज्यप्रवर 'वेथीश्वरम कोईल' में स्थित 'वेथीश्वरम मंदिर' के सामने से आगे पधारे। लोगों ने बताया कि यह एक प्राचीन मंदिर है। 'वैथीश्वरम' अर्थात बीमारियों का इलाज करने वाला। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर के माध्यम से ४४८० बीमारियों का उपचार संभव है। मंगल ग्रह के दोष निवारण की दृष्टि से भी इस मंदिर का महत्त्व है। किंवदंती के अनुसार सीता को बचाने का प्रयास करने वाले 'जटायु'

12 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
Date of Publication : 14-01-2019 L.No.-U (C) 200/2018-2020
(Page 1-12) Licence to Post without Pre-payment
11-17 जनवरी 2019 Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

नामक पक्षी का अंतिम संस्कार जिस स्थान पर किया गया था, वह स्थान यही है। इस स्थान पर बनी जटायु की समाधि को 'जटायु कुंडम' नाम से भी जाना जाता है।

मार्ग में अनेक स्थानों के बाहर नाडी ज्योतिष केन्द्र से संबंधित बोर्ड लगे हुए थे। 'नाडी ज्योतिष' एक अनोखी विधा है। इसके अंतर्गत सबसे पहले पुरुष से दांयें हाथ के अंगूठे और महिला से बांयें हाथ के अंगूठे का निशान लिया जाता है। उसके बाद उस निशान से मिलान कर उससे संबंधित ताड़पत्र को निकाला जाता है। जिस ताड़पत्र में उस व्यक्ति का नाम, पिता व माता का नाम आदि का मिलान हो जाता है, उस ताडपत्र में अंकित उसके अतीत, वर्तमान और भविष्य से संबंधित बातों को बताया जाता है। तमिल भाषा में लिखित इन ताड़पत्रों में अपने नाम, अपने माता-पिता के नाम, जन्मतिथि आदि कई बातों को यथार्थ में अंकित देखकर-सुनकर व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाता है। कहते हैं कि ताड़पत्र प्राचीन ऋषियों-मुनियों द्वारा लिखे गए हैं। 'वेथीश्वरम कोईल' गांव ज्योतिष की इस विधा के कारण भी प्रसिद्धि को प्राप्त है।

करीब ४ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर वैथीश्वरम कोईल में स्थित इन्द्रा मण्डप में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आज रात्रि में चिदम्बरम मंदिर के पुजारी श्री सेल्वरत्न दीक्षित पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्होंने चिदम्बरम मंत्र का पाठ करते हुए चिदम्बरम में पुनः शीघ्र पधारने की प्रार्थना की।

बच्चे को दूध की भांति चारित्रात्माओं को प्रतिदिन की आलोयणा

बीदासर समाधिकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीजी की ओर से दिनांक २८ दिसम्बर को एक पत्र पूज्यप्रवर को निवेदित करवाया गया। जिसमें उन्होंने पूज्यप्रवर से पूछा था--'जैसे प्रायश्चित्त बिन मांगे नहीं दिया जाता, वैसे ही क्या प्रतिदिन सुबह-सायं की आलोयणा बिन मांगे दी जा सकती है?

आचार्यप्रवर ने उन्हें ३० दिसम्बर को जो प्रत्युत्तर प्रदान किया, उसका अंश इस प्रकार है--'सुबह शाम की आलोयणा बिना मांगे ही दे देनी चाहिए। जैसे कोई बच्चा दूध न मांगे तो भी उसे पिला दिया जाता है, वैसे ही अलोयणा दे देनी चाहिए।'

चारित्रात्माओं के परिशोधन के लिए पूज्यप्रवर की सजगता और सटीक उदाहरण सबके लिए प्रेरणा बन गए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

२१०००/- स्व. श्रीमती सुशीलादेवी धनराजजी सेमलानी (चाणोद-मुम्बई) की पुण्य स्मृति में सेमलानी परिवार।
११०००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी सेठिया (धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. मोहनलालजी सेठिया, मोमासर-दिल्ली) के संथारामय स्वर्गवास पर उनके सुपुत्र व पुत्रवधू पुखराज-सरोज, सुखराज-प्रेम, कमल-कल्पना, सुपौत्र राजीव, कपिल, सुनील, विकास सेठिया परिवार।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्टीट, कोलकाता ७०० ००१
eks ua 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से eqfnz rFkk v.kqz Hkou] 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला